International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 322-324

प्रेमचंद की नारी–संवेदना

डॉ० विजय शंकर मिश्र
हिन्दी विभाग, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), अशोक विहार, नई दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय जीवन में नारी के प्रति दो सम्पूर्णतया भिन्न प्रकार की दृष्टियाँ देखने को मिलती है। एक सोच ''जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं''[1] और उसे ''गृहिणी, सचिव, सखी, शिष्या, देवी, प्रिया''[2] मानने की है। इसके अनुसार वह सीधे–सीधे 'देवी' है। दूसरी सोच ''स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को देवता भी नहीं जानते, मनुष्य कैसे जान सकता है''[3] की है। इसके अनुसार वह नितांत अनिश्चित स्वभा की है, रहस्य है इसीलिए उसे आजीवन 'अधीन' रखना चाहिए।''[4] मानेकि वह 'वस्तु' है। 'गोदान' 'वीमेंस लीग' द्वारा आयोजित गोष्ठी में प्रेमचंद के विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। मेहता कहते हैं कि यदि नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं, तो वह कुलटा हो जाती है और यदि पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं, तो वह देवता बन जाता है।''[5] यह समझ स्पष्टतया स्त्री और पुरुष को अलग–अलग पायदानों पर बैठा कर समीक्षित करती है। आज का नारीवादी आंदोलन इससे असहमत हो सकता है, लेकिन इस तथ्य में रंच मात्र भी संदेह नहीं है कि कथा–सम्राट प्रेमचंद नारी के प्रति अतीव संवेदनशील हैं।

नारी के बलिदानी–ओजस्वी–स्वाभिमानी चरित्र की विवृति करने में मुंशी प्रेमचंद को पूरी सफलता मिली है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी के प्रखर चरित्रा को पूरे कौशल के साथ प्रकाशित किया है। 'रानी सारंधा' की सारंधा ''आन–बान–शान'' की रक्षा को ही जीवन के 'होने' का लक्षण मानती है। इस कहानी में सारंधा का युद्ध में हिस्सा लेने, पलायन का विरोध, आरेछे में ''राजा की रानी'' बन कर प्रसन्न रहने की मानसिकता, विद्रोही शहज़ादों के रूप में शरणागत की रक्षा, वली खाँ के अश्व–प्रसंग, छत्रसाल को बँधक के तौर पर रखना तथा अंततोगत्त्वा पति की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी छाती में कटार चुभो कर स्वयं आत्महत्या करने जैसे प्रायः समस्त कर्म उसके ओजस्वी चरित्र के ज्वलन्त निदर्शन हैं।''[6] 'शांति' की गोपा किसी से सहायता नहीं लेती।''[7] 'होली का उपहार' की सुखदा की स्वतंत्र 'पहचान' है। उसका प्रभावी व्यक्तित्व पति को प्रेरणा देने में समर्थ है। वह 'स्वदेशी' की समर्थिका है, राष्ट्रवादी है।''[8] 'सती' की चिन्ता विलक्षण व्यक्तित्व की स्वामिनी है। उसका पति रत्नसिंह समरभूमि से पलायन करता है। चिन्ता उसके जीवित होते हुए भी स्वयं को विधवा घोषित कर सती हो जाती है क्योंकि स्वामी की कायरता असह्य है।''[9] ये सब नारी की बलिदानी–स्वामिमानी छवियाँ हैं। ये छवियाँ ही राष्ट्रों और समाजों को प्रेरणा प्रदान करती हैं।

मुंशी प्रेमचंद ने नारी के विलक्षण स्वभाव को अंकित करने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। इस दृष्टि से 'फातिहा' कहानी विशेष उल्लेख है। इस कहानी की नायिका तूरया है। उसने हिम्मत सिंह के प्राणों की रक्षा की। दोनों में प्रेम हो गया। बाद में वह इस तथ्य से परिचित हुई कि उसके प्रेमी की पत्नी की मृत्यु नहीं हुई है। वह ज़िन्दा है। ईर्ष्या, क्रोध, प्रतिहिंसा से जलती तूरया ने हिम्मत सिंह की पत्नी की हत्या कर दी। बाद में हिम्मतसिंह उसके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है, लेकिन वह उसे अस्वीकृत कर देती है। वह अकेली रहने को तैयार है, पर असत्यभाषी प्रवंचक से विवाह नहीं कर सकती।''[10] 'शान्ति' की नायिका अपने मन में पति के देहांत की कल्पना करती है। वह शोकमय है, लेकिन काल्पनिक शोक में उसे सुख की भी अनुभूति होती है।''[11] 'परीक्षा' में घोर आतंक की अवस्था में भी कुछ 'ढीठ' बेगमें नादिरशाह के प्रभावी व्यक्तित्व से तरल हो उठती है।''[12] 'सती' की चिंता युद्धभूमि से पलायन करने वाले पति के जीवित होते हुए भी उसे मरा मान कर सती हो जाती है।''[13] 'सुजान भगत' में पत्नी कर्मविमुख पति की पूर्ण उपेक्षा करती है।''[14] 'सौत' कहानी में गोदावरी स्वय को बाँझ समझ कर पति से दूसरी पत्नी या सौत लाने का आग्रह करती है, जिससे कि कुल–वंश चल सके।''[15] नारी के ऐसे चित्र अभूतपूर्व हैं। ये अपवाद हैं लेकिन ऐसी भंगिमाएँ नारी के विचक्षण स्वरूपों की प्रकाशिका भी हैं।

पारम्परिक भारतीय स्त्री सामान्यतया स्वभाव से ही प्रेमव्रती, संवेदनशील, समर्पणशीला और पति–पुत्र के निर्माण में स्वयं के जीवन को समर्पित करने वाली है। वह पुरुष के निर्माण में स्वयं को तोड़ती दीखती है। 'रानी सारंधा' में शीतला पति के समरभूमि से पलायन पर प्रसन्न होती है क्योंकि वह किसी भी अवस्था में अपने सर्वस्व को जीवित देखना चाहती है। इसी कहानी में स्वयं परम ओजस्वी रानी सारंधा के संदर्भ में प्रेमचंद कहते हैं कि, '' यह निर्बलता स्त्री–जाति की शोभा है।''[16]

इस दृष्टि से 'सती' की मुलिया भी उल्लेख्य चरित्र है। उसका आदर्श पति को सर्वस्व मान कर उसके मरने के बाद भी उसकी स्मृति को चेतना में जीवंत रूप में धारण करने का है।''[17] 'दो बहनें' की रूपदुलारी को सगी बहन रामदुलारी की सम्पन्नता से मन–ही–मन ईर्ष्या है।''[18] 'बड़े घर की बेटी' आनंदी या 'पत्नी' का रूप, बल, मान पति में निहित है।''[19] यह स्थापित पारम्परिक सामाजिक सत्य है जिसमें 2017 ई. तक आते–आते कुछ दरारें पड़ने की सूचनाएँ मिलने लगी हैं।

कथा–सम्राट ने स्त्री के प्रेमिका एवं पत्नी रूपों की विवशता के भी वर्णन किए हैं। यहाँ वह सामाजिक मूल्यों की मारी है। उन्होंने प्रेम एवं पातिव्रत के संदर्भों में इन मूल्यों से त्रस्त नारी के मार्मिक वर्णन किए हैं। 'मर्यादा की वेदी' की प्रभा का अंतर्द्वन्द्व हृदयविदारक है। उसकी ''कहाँ जाऊँ, क्या करूँ'' की चिन्ता स्त्री के असुरक्षा–बोध की कहानी कहती है। प्रेम एवं पातिव्रत के दो धर्मों में पिसती–सिसकती इस शत–प्रति–शत निर्दोष रमणी की अंतिम नियति मृत्यु है।''[20] सर्वथा भिन्न संदर्भों में ही सही, 'कायर' में प्रेम में धोखा खाई प्रेमा का भाग्य भी ऐसा ही अटल है। उसके जीवन का भी अंतिम समाधान आत्मघात ही है।''[21] प्रभा और प्रेमा के चरित्र सिद्ध करते हैं कि भावनाशीला–समर्पणशीला नारी ही प्रेम धर्म का वहन करने में निपुण है। इस संदर्भ में 'राजा हरदौल की कुलीना

की व्यथा भी दृष्टव्य है।''[22] भारतीय समाजों में उसकी या नारी की परीक्षा अभी भी जारी है।

प्रेमचंद ने नारी–संदर्भ में पुरुष के मनोविज्ञान के अतीव प्रभावी–प्रामाणिक चित्र उँकेरे हैं। 'सती' में स्त्री को स्वतंत्र नहीं छोड़ने की मानसिकता है। कल्लू का विचार नारी को चंचल मानने का है। वह अपनी पत्नी मुलिया द्वारा देवर से साड़ी लेने मात्र से उसके चरित्रहीन होने की कल्पना करके निर्जीववत् हो जाता है। स्वयं वह वेश्यागामी और व्यभिचारी है। उसकी मृत्यु भोग–विलास और यौन–रोग से होती है। दूसरी ओर पुरुष राजा पत्नी के मरने के तुरंत बाद सांड़ों की भाँति निःशंक–निर्द्वद्व प्रसन्न घूमता है।''[23] सोच–समझ में कल्लू और 'राजा हरदौल' के जुझारसिंह 'एक' ही स्वभाव के हैं। जुझारसिंह की मानसिकता हत्यारी है।''[24] 'फातिहा' का हिम्मतसिंह बड़ी सरलता से झूठ बोल कर तूरया को धोखा देता है।''[25] 'परीक्षा' में नादिरशाह पुरुष होने के कारण बड़ी आसानी से बेगमों को साहस, जौहर, जान देने का पाठ पढ़ाता है, लेकिनऐसी कोई कक्षा बादशाह या मुगल सेना की नहीं ली जाती।[26] 'होली का उपहार' का अमरकांत मन में निश्चिंत है। कि उसकी पत्नी सुखदा विलायती साड़ी पर ही रीझेगी।''[27] 'कायर' के केशव के लिए प्रेमा खेलने अर्थात् मनोविनोद का साधन मात्र है।''[28] 'सौत' (भाग दो) की रज़िया की उम्र ढली, दो–तीन बच्चे मरे और पति रामू नई पत्नी ले आया।''[29] 'सद्गति' में पण्डित जी''[30] और 'बड़े घर की बेटी' में लालबिहारी''[31] अवसर मिलते ही पत्नी पर हाथ साफ कर लेते हैं। ये सब प्रकरण पारिवारिक–सामाजिक प्रसंगों में नारी पर अत्याचार करने और उसके मन तक पहुँचने का कोई प्रयत्न नहीं करने वाले पुरुष–मनोविज्ञान का यथार्थ हैं।

प्रेमचंद स्वभावतया नारी को उच्चतम् मानवीय मूल्यों से सम्पन्न देखना चाहते हैं। 'परीक्षा' में वे नादिशाह के मुख से स्त्री को इन्द्रिय लिप्सा से मुक्त होकर जौहर, स्वाभिमान, बलिदान के पथ पर चलने की शिक्षा देते हैं। प्राण की तुलना में गरिमा अधिक मूल्यवान है।''[32] क्योंकि यह निर्मात्री एवं प्रेरक है। 'बड़े घर की बेटी' में भी ऐसा ही है। वहाँ आनंदी स्वाभाविक मनुष्यसुलभ क्रोध एवं अहं को कम कर परिवार को जोड़ती है।''[33] नारी इस कला में प्रवीण होती है। 'घर जमाई' में प्रेमचंद ने 'पिता' को रबड़ी, मिठाई आदि बतलाया है, जो मिल जाए तो बहुत अच्छा लेकिन नहीं भी मिले तो विशेष अंतर नहीं पड़ता– जबकि 'माता' रोटी–दाल होने के कारण अनिवार्य है।''[34] उसका महत्त्व अपार है। 'रानी सारंधा' सदृश कहानियों में नारी का ओजस्वी रूप उभरा है।

नारी 'वस्तु' नहीं, 'व्यक्ति' है– पुरुष की भाँति। यह प्राकृतिक सत्य है। इस सत्य को सामाजिक नियम–विधान आदि अनेक अवसरों पर क्रूरता के साथ दबाने का प्रयास करते हैं। प्रेमचंद इस विषय में पूर्णतया प्रतिबद्ध हैं। 'शान्ति' में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रश्न उभरा है। यहाँ स्त्री स्वतंत्र निजी समझ के अनुसार मूल्यों की समीक्षा करने का प्रयत्न करती है। उसे निजता की तलाश है। इन प्रयत्नों का अंत करुण है– स्थिति यह है कि पत्नी को अपने पति पर निर्भर होना होगा अन्यथा सर्वनाश निश्चित है। केदार और सुन्नी दोनों की मृत्यु हो जाती है।''[35] इस दृष्टि से 'नैराश्य–लीला' कहानी विशेष उल्लेख्य है। समाज बाल–विधवा कैलाश कुमारी को मनोरंजन, सन्यास, अध्यापन, सेवाव्रत आदि कुछ भी नहीं करने देता। उसे कुछ भी करने का अधिकार नहीं है, सिवाय मरा जीवन जीने के। उसे 'वस्तु' माना गया, जीवंत इकाई नहीं। उसे चंचल गाय माना गया, जो किसी भी खेत में चरने जा सकती है। इस कहानी में समाज की बंजर सोच और तथाकथित सामाजिक विधि–विधान एक विवश–अराजक विद्रोह को जन्म देते हैं। इस कहानी का अंत बेहद अर्थगर्भित है। नारी की कुण्ठा और अंततः विद्रोह बदलाव के स्वर ध्वनित करते 'भी' प्रतीत होते हैं। कैलाशकुमारी अन्यायी समाज को ठोकर मार कर अपनी आत्मा की आवाज़ सुनने की घोषण करती है। कहानी का अंत अनेकानेक अर्थों की सूचना देता है।''[36] 'होली का उपहार' की सुखदा की स्वतंत्र राष्ट्रवादी स्वदेशी–धारण करने की मानसिकता पति अमरकांत को प्रेरणा प्रदान करती है।''[37] यह एक तरह से बदलाव की सूचना भी है। नारी घर से बाहर आ कर राष्ट्रीय दायित्वों को निभाहते दीखती है, लेकिन 'घर' को विस्मृत भी नहीं करती। घूँघट के रूप में मर्यादा–परम्परा जीवित है।

प्रेमचंद कहीं भी यथार्थ को विस्मृत नहीं करते। इसीलिए उनकी कहानियों में नारी के करुणतम् चित्र अंकित हुए है। 'बेटों वाली विधवा' में विधवा माता फूलमती का पुत्रों और बहुओं द्वारा घोर तिरस्कार और उनके द्वारा मनु का हवाला दे कर उसे संपत्ति पर अधिकार से वंचित कर देना हृदयविदारक है।''[38]

कथा–सम्राट की कहानियों में नारी के असंख्य चित्र अंकित हुए हैं। 'परीक्षा' में पर्दा–प्रथा के स्पष्ट संकेत हैं– बेगमों पर सूर्य की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए।''[39] 'बड़े घर की बेटी' में 'बड़े घर' का तात्पर्य धनी–मानी ही लगता है क्योंकि कुलीनता तो लालबिहारी की पत्नी में भी आनंदी जितनी ही रही होगी।''[40] 'दो बैलों की कथा' में झूरी की पत्नी अतिरिक्त मायका–प्रेम के कारण हीरा–मोती को 'नमकहराम' कह कर सूखा भूसा खाने को देती है।''[41] 'शतरंज के खिलाड़ी' में मीर की पत्नी ''अज्ञात कारणों'' से उनका घर पर रहना पसंद नहीं करती। यह अज्ञात कारण उसका व्यभिचारिणी होना है।''[42]

नारी के मन के शोध करने की दृष्टि से बांग्ला कथाकारों, विशेषकर शरच्चन्द्र का स्थान बहुत ऊँचा है। हिन्दी में जैनेन्द्र कुमार इस दृष्टि से अन्यतम् हैं। मुंशी प्रेमचंद की प्रकृत अभिरुचि सामाजिक स्थितियों के अनुसंधान की है। इसमें राजनीतिक–आर्थिक–सांस्कृतिक अवस्थाओं का चित्रण भी अनायास ही हो जाता है। बहुत सहज रूप में, पूर्ण अयत्नज रूप में उन्होंने नारी के जीवन का प्रभावी अंकन करने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है, इसमें रंच मात्र भी संदेह नहीं।

संदर्भ

1. मनु–स्मृति, मनु
2. कालिदास, भास सदृश कवि
3. मनु–स्मृति, मनु
4. वही
5. गोदान, प्रेमचंद
6. रानी सारंधा, प्रेमचंद
7. शांति, प्रेमचंद
8. होली का उपहार, प्रेमचंद
9. सती, प्रेमचंद
10. फातिहा, प्रेमचंद
11. शांति, प्रेमचंद
12. परीक्षा, प्रेमचंद
13. सती, प्रेमचंद
14. सुजान भगत, प्रेमचंद
15. सौत, प्रेमचंद
16. रानी सारंधा, प्रेमचंद
17. सती, प्रेमचंद
18. दो बहनें, प्रेमचंद
19. बड़े घर की बेटी, प्रेमचंद
20. मर्यादा की वेदी, प्रेमचंद

21. कायर, प्रेमचंद
22. राजा हरदौल, प्रेमचंद
23. सती, प्रेमचंद
24. राजा हरदौल, प्रेमचंद
25. फातिहा, प्रेमचंद
26. परीक्षा, प्रेमचंद
27. होली का उपहार, प्रेमचंद
28. कायर, प्रेमचंद
29. सौत, प्रेमचंद
30. सद्गति, प्रेमचंद
31. बड़े घर की बेटी, प्रेमचंद
32. परीक्षा, प्रेमचंद
33. बड़े घर की बेटी, प्रेमचंद
34. घर–जमाई, प्रेमचंद
35. शन्ति, प्रेमचंद
36. नैराश्य–लीला, प्रेमचंद
37. होली का उपहार, प्रेमचंद
38. बेटों वाली विधवा, प्रेमचंद
39. परीक्षा, प्रेमचंद
40. बड़े घर की बेटी, प्रेमचंद
41. दो बैलों का कथा, प्रेमचंद
42. शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद